International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 10 Issue 7 Ser. I || July 2021 || PP 75-79

भारतीय चित्रकला में जल रंग पद्धति (वॉष) का उद्‌भव और विकास

डॉ0 हेमन्त कुमार राय
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
चित्रकला विभाग
एम. एम. एच. कॉलेज, गाजियाबाद

सूर्यप्रकाश
सहायक प्राध्यापक
चित्रकला विभाग
एम. एम. एच. कॉलेज, गाजियाबाद

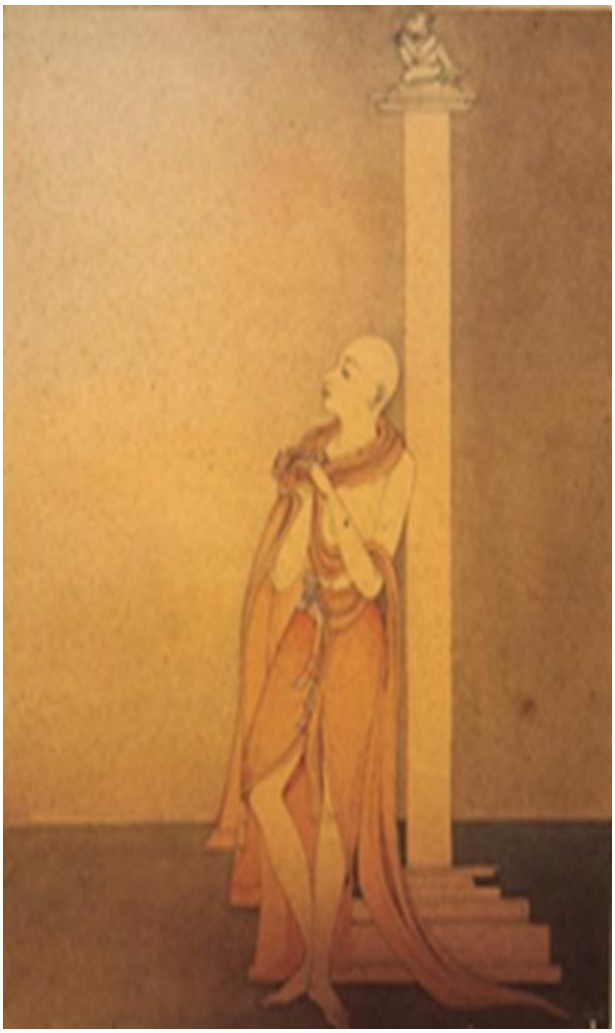

सर

वॉष तकनीक जिसे प्रक्षालन या धोवन विधि भी कहा जाता है। भारतीय चित्रकला में एक महत्वपूर्ण एवं युग प्रवर्तक तकनीक रही है। इस प्रविधि ने चित्रकारों को भारतीय आत्मीयता से जोड़ा। वॉष तकनीक मे चित्र जल रगं द्वारा कागज पर बनाए जाते हैं। इस तकनीक से चित्रों में सरसता, मन को शीतलता और शांति प्रदान करने वाला सौंदर्य उत्पन्न होता है जो चित्त को सहज ही आकर्षित कर लेता है। वॉष चित्रों के सौंदर्य में आध्यात्मिकता का बोध होता है। चित्रों का धुंधलापन और उसमें से झांकती आकृतियां दर्शक को चित्रों के अन्य तत्वों को खोजने के लिए आमंत्रित करती हुई प्रतीत होती हैं। समीक्षकों ने वाष तकनीक के चित्रों की प्रशंसा की और पसंद किया। इस तकनीक की सफलता ने कई भारतीय चित्रकारों को नए प्रयोग करने के लिए प्रेरित किया। इस तकनीक के माध्यम से चित्रकारों ने प्राचीन भारतीय गौरव को तथा अजंता चित्रों के सौंदर्य को पुनः प्राप्त करने का प्रशंसनीय प्रयत्न किया। अधिकांश भारतीय कला विद्यालयों में वॉष तकनीक एक परंपरा के रूप में पढ़ाई और सिखायी जा रही है यद्यपि वॉश तकनीक द्वारा चित्र बनाना

एक लंबी प्रक्रिया है और इसके लिए धैर्य की आवश्यकता होती है फिर भी कई आधुनिक कलाकार इस विधा में सुंदर चित्र बना रहे हैं और इसमें नए प्रयोग भी कर रहे हैं जोकि अत्यंत सराहनीय है।

कुंजी भूत शब्द–वॉश विधि, बंगाल शैली, स्वदेशी, अवनींद्रनाथ टैगोर।

भारतीय संस्कृति सदैव से परिवर्तनशीलता और बाह्यतत्व को अपने में आत्मसात करने वाली रही है। संस्कृति की परिवर्तनशीलता और आत्मसात करने का यह गुण हमें संस्कृति के अभिन्न अंग चित्रकला में भी देखने को मिलता है जिस तरह भारतीय संस्कृति के अवयव संगीत, नृत्य, दर्शन आदि समय के साथ चलने के लिए परिवर्तनकारी तत्वों को अपने में समाहित कर रहे हैं उसी तरह चित्रकला भी भिन्न–भिन्न समय में विभिन्न रूप रंग धारण करती रही है। प्रागैतिहासिक काल से लेकर आधुनिक काल तक हमें भारतीय चित्रकला में अनेक परिवर्तन देखने को मिलते रहे हैं। चित्रकला में रूपांतरण तत्कालीन समाज, धर्म और राजनीतिक परिवर्तन का द्योतक होता है। मौर्य, गुप्त, सातवाहन, राष्ट्रकूट, वाकाटक् आदि राजवंशों की कलात्मक उपलब्धियां हमें अजंता, एलोरा, बाघ आदि गुफाओं के चित्रो में देखने को मिलती है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो चित्रकला के स्वरूप में परिवर्तन के मुख्य कारण समाज, धर्म के साथ–साथ राजनीतिक कारण अत्यंत महत्वपूर्ण रहे हैं यद्यपि चित्रकला के संरक्षण में सर्वाधिक महत्वपूर्णकारक राजनीतिक ही रहे हैं। अजंता, बाघ, बदामी, पाल, जैन, अपभ्रंश, राजस्थानी, मुगल, पहाड़ी सभी कला शैलियों के उद्भव और संरक्षण में राजवंशों की अहम् भूमिका रही है। यहां तक कि पटना शैली के उद्भव में भारतीयों और अंग्रेजों के संयोग का राजनीतिक कारक ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

भारतीयों और अंग्रेजों का संयोग भारतीय संस्कृति में आमूल–चूल परिवर्तन का कारण बना। संस्कृति के इस परिवर्तन से उसका कोई अवयव बच नहीं पाया। चित्रकला में भी अंग्रेजों और भारतीयों के संयोग का प्रभाव हुआ जिससे भारतीय चित्रकला अपना मूल स्वरूप खो बैठी। स्थानीय चित्रकार यूरोपीय चित्रकला के अंधानुकरण को ही अपना ध्येय समझ बैठे। उसमें ही गौरवानुभूति करने लगे। इससे भारतीय चित्रकला अपना चमक और आकर्षण खो बैठी। अंग्रेज भारतीय चित्रकला को यूरोपीय चित्रकला से हीन समझते थे और प्रायः भारतीय चित्रों का उपहास उड़ाया करते थे। अंग्रेजों ने भारतीय चित्रकला के प्रति उपहास पूर्ण रवैया अपनाया। अंग्रेजों द्वारा स्थापित विभिन्न महाविद्यालयों में यूरोपीय कला पद्धति मे ही शिक्षण होता था। भारतीयों द्वारा विभिन्न कला शैलियों अध्ययन से भारतीय कला में संक्रमण का दौर आया। इस समय भारतीय चित्रकला में अस्पष्टता और दिशाहीनता थी। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन ने चित्रकारों को स्वदेशी और भारतीय कहीं जा सकने वाली चित्र शैली और रचना पद्धति की खोज के लिए प्रेरित किया। ऐसे में सन 1896 ईस्वी में राजकीय कला विद्यालय, कोलकाता मे प्रिंसिपल के रूप में ई.बी.हैवेल की नियुक्ति हुई। ई.वी. हैवेल कलाकार चार्ल्स रिचर्ड हैवेल के पुत्र थे तथा कला मर्मज्ञ थे। वह भारतीयों के लिए पाश्चात्य शैली की अपेक्षा भारतीय चित्र शैली पर आधारित कला शिक्षा के पक्षधर थे। वह भारतीय चित्रकला के सौंदर्य और सामर्थ्य से परिचित थे। इसलिए उन्होंने अवनींद्रनाथ को भारतीय चित्र शैलियों के अध्ययन के लिए प्रेरित किया जिसके फलस्वरूप भारतीय चित्रकला में पुनर्जागरण देखा गया। ई. बी. हैवेल की प्रेरणा और अवनींद्र नाथ टैगोर के प्रयास से बंगाल शैली की स्थापना हुई। वॉश पद्धति इस बंगाल शैली का आधार बनी।

वॉश पद्धति भारतीयता और स्वदेशी की खोज का परिणाम कही जा सकती है। बीसवीं शताब्दी मे जापानी और ब्रितानी संयोग और जापानियों की एशिया में आक्रामक गतिविधियों के कारण पूरे एशिया में जापानी कला ने नई पहचान प्राप्त की। इसी बीच 1901 ईसवी में जापानी नागरिक अकाउंट ओकाकुरा कोलकाता आए तथा अबनींद्रनाथ से मुलाकात हुई। अकाउंट ओकाकुरा द्वारा 'आइडल्स ऑफ द ईस्ट' में पूर्वी आदर्शों की स्थापना ने उन्हें अत्यंत प्रभावित किया। टैगोर जी ने हाल ही मे सन 1901 में पामर के निर्देशन में अकादमिक प्रशिक्षण पूर्ण किया था। उन्होंने चित्रकार ताइवान और हिस्दा की जापानी जल रंग चित्रण विधि का सूक्ष्मता से अवलोकन किया। अबनींद्रनाथ टैगोर जो कि एक भारतीय रचना पद्धति की खोज में थे। जापानी वॉश पद्धति और ब्रितानी जल रंग पद्धति को मिश्रित करने का नया प्रयोग किया। उन्होंने जापानी तकनीक कागज को पहले भिगोकर फिर उस पर चित्रण करना तथा ब्रितानी जल रंग पद्धति पारदर्शी रंग को आवश्यकता अनुसार कई सतह में रंग लगाकर वांछित प्रभाव प्राप्त करने के तरीके को अपनी प्रतिभा से संयोजित किया और एक नवीन प्रक्षालन पद्धति का विकास किया जो वॉश पद्धति के रूप में प्रसिद्ध हुई।

वॉश पद्धति में चित्र के लिए विंसर न्यूटन का व्हाट्समैन कागज या कार्टिज कागज का इस्तेमाल किया गया। इस विधा में पहले कागज पर रेखांकन के पश्चात कागज को भिगोया जाता है फिर उस पर सावधानी से रंग लगाया जाता है फिर उसे सुखाकर प्रवाहित जल में धोया जाता है। कुछ चित्रकार पहले रंग से रेखांकन करने के पश्चात चित्र वॉश करते हैं। कागज सूखने पर फिर रंग लगाया जाता है और प्रवाहित जल में धुला जाता है जिससे रंग की रंगत कागज पर सुदृढ़ हो जाती है। यह प्रक्रिया मनवांछित प्रभाव पाने तक की जाती है तत्पश्चात रंग या कलर वॉश वातावरण के प्रभाव के अनुसार किया जाता है। अंत में चित्र में फिनिशिंग की जाती है। साधारणतया वॉश पद्धति में चित्र को पूर्ण करने में लगभग आठ स्तरों पर कार्य किया जाता है।

वॉश पद्धति में चित्रित दृश्यों में कोमल प्रभाव होता है। चित्र में कलर वॉश से धुंधलापन या कुहासा जैसे वातावरण का प्रभाव निर्मित होता है जो आंखों को शीतलता प्रदान करता है। चित्रों में आध्यात्मिक प्रभाव व्यक्त करने के लिए वॉश पद्धति अत्यंत उपयुक्त है। वॉश पद्धति में प्रयुक्त गर्म रंग भी आँखों में चुभते नहीं हैं। इस विधा में निर्मित वातावरण से झांकती आकृतियां दर्शक को स्वयं की ओर आकर्षित करती हुई प्रतीत होती हैं। अपने इन्हीं विशेषताओं के कारण वॉश पद्धति बंगाल शैली के चित्रों का आधार बनी।

वॉश तकनीक को कला समीक्षकों ने खूब सराहा। बंगाल शैली के प्रसार के साथ–साथ वॉश पद्धति का भी प्रचार–प्रसार हुआ तथा देश के कुछ भागों को छोड़कर लगभग पूरे देश में यह पद्धति सहर्ष अपनाई गई। युग प्रवर्तक अवनींद्रनाथ टैगोर द्वारा विकसित इस प्रविधि के विकास में उनके शिष्यों ने मुख्य भूमिका निभाई जो विभिन्न संस्थानों में आचार्य एवं प्राचार्य के पद पर नियुक्त हुए। यहां पर कुछ प्रमुख चित्रकारों का उल्लेख वांछित प्रतीत होता है जिन्होंने वॉश पद्धति में अपनी पहचान बनाई और इसे लोकप्रिय बनाने में अपना योगदान प्रदान किया।

अवनींद्र नाथ टैगोर– टैगोर वॉश पद्धति के प्रणेता थे। उन्होंने वाश पद्धति की खोज कर भारतीय चित्रकला में एक नए युग की शुरुआत की। रवींद्र नाथ टैगोर जी ने कहा था 'उन्होंने देश को आत्महीनता के पाप से बचाया और उसे निराशा के गर्त से निकालकर वह सम्मान प्राप्त करवाया है जो अधिकार से उसका था।' अवनीन्द्रनाथ टैगोर मुगल विषयक चित्रों में सिद्धहस्त थे। उनके कुछ प्रमुख चित्र इस प्रकार हैं– अंतिम यात्रा, भारत माता, ताजमहल का निर्माण, औरंगजेब का बुढ़ापा, ताज को निहारता शाहजहां, मरण सैय्या में शाहजहां आदि ।

नंदलाल बोस–बोस शिव सिद्ध चित्रकार कहे जाते हैं। नंदलाल बोस के चित्र मे लयात्मकता विशेष दर्शनीय है। नंदलाल जी के कुछ प्रमुख चित्र वीणावादिनी, सती का देह त्याग है। सन 1954 में उन्हें पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया।

असित कुमार हालदार– हालदार जी ने वॉश के साथ–साथ टेंपरा में भी चित्रण किया। आपके चित्रों में भावपूर्ण कल्पना संगीत, रेखांकन तथा कोमल रंग योजना इन सब का सुंदर समन्वय हुआ है तथा मुद्राओं के अंकन में विशेष मधुरता है।

कालिपाड़ा घोषाल–घोषाल बंगाल शैली के प्रतिष्ठित चित्रकार थे। वह 'गरीब उल्लाह मेमोरियल लाइफ' पुरस्कार से सम्मानित किए गए। शकुंतला, हर पार्वती और बुद्ध उनके कुछ प्रमुख चित्र हैं।

देवी प्रसाद राय चौधरी– चौधरी जी चित्रकार के साथ–साथ प्रसिद्ध मूर्तिकार भी थे। नारी सौंदर्य को उन्होंने अपने चित्रों में प्रमुख स्थान दिया। आंधी के पश्चात, महल की गुड़िया, अभिसारिका आदि उनके कुछ प्रमुख जल रंग चित्र हैं।

शैलेंद्र नाथ डे– वह महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट, जयपुर में शिक्षक रहे। उन्होनें सत्यम शिवम सुंदरम् के साथ ही कुरूप में भी सुंदर अभिव्यंजना की रसात्मक कल्पना की। मेघदूत उनकी महत्वपूर्ण चित्र श्रृंखला है।

मुकुल डे– मुकुल डे की कला में रेखाओं का संकोच और लयात्मकता है तथा अजंता की रूमानी सौंदर्य और गरिमा भी है।

शारदा चरण उकील– आपके चित्र काल्पनिक जगत की कृतियां हैं जिन्मे भावपूर्ण मुद्राएं तथा रेखांकन दर्शनीय है। चित्रों में मुगल तथा इरानी शैलियों का प्रभाव भी देखने को मिलता है। राधा कृष्ण, प्रेम मे पीड़ित विरहणी आपके उल्लेखनीय चित्र है।

रामगोपाल विजयवर्गीय– विजय वर्गीय जी शैलेंद्र नाथ के शिष्य थे। उन्हें राजस्थानी कला में रवींद्रनाथ तथा अवनींद्र नाथ के समान स्थान प्राप्त है। वह बंगाल शैली के कुशल चित्रकार थे। मेघदूत तथा गीतगोविंद आपकी प्रसिद्ध चित्र श्रृंखलाएं हैं। आप के अधिकांश चित्रों का विषय पौराणिक ही है।

देवकीनंदन शर्मा–पक्षी अंकन आपका प्रिय विषय रहा है। आपके मयूर चित्रण की तुलना संपूर्ण विश्व में नहीं है। देवकीनंदन शर्मा को राजस्थान का मंसूर कहा गया है।

समरेंद्र नाथ गुप्ता– समरेंद्रनाथ गुप्ता लाहौर कला महाविद्यालय से जुड़े रहे तथा वॉश पद्धति में अनेक प्रसिद्ध चित्र बनाएं। उमर खय्याम उनकी प्रसिद्ध चित्र श्रृंखला है।

अब्दुर्र रहमान चुगताई– उन्हें 'रंगो का सम्राट' की संज्ञा दी गई। उनकी रंग–योजना निराली है। चुगताई की कला में भारतीय ईरान, मुगल पद्धति की उत्तम फिनिश है। हीरामन तोता, राधा कृष्ण, कवि, सहारा की राजकुमारी आदि उनके प्रसिद्ध चित्र हैं। उनके चित्र में इस विषम संसार से भी एक सुंदर संसार की कल्पना है जो एक प्रकार का मोहक पलायन भी है।

सुधीर रंजन खस्तगीर– खस्तगीर गवर्नमेंट कॉलेज आफ आर्ट एंड क्राफ्ट लखनऊ में प्राचार्य रहे। उन्होंने मूर्तिकला और चित्रकला दोनों में कार्य किए। उनके प्रमुख चित्र हैं नववधू ,बसंत ,यात्रा, मां और शिशु, नग्ना, भिक्षुणी मां आदि।

सुखबीर सिंघल– सुखबीर सिंघल वॉश विधा के प्रसिद्ध चित्रकार हैं। उनके चित्र पौराणिक विषयों पर आधारित हैं। चित्रों में भावात्मकता तथा श्वेत, नीले, पीले और लाल रंग की आभा दर्शनीय है। आकृतियों और वस्त्रों की लयात्मकता दृष्टि को बांधे रखती है। उनके प्रमुख चित्र वागदत्ता का स्वप्न, श्रृंगार ,एकाग्र चित्त अर्जुन, प्रस्ताव, प्रथम मिलन, सप्तपदी, परास्त अर्जुन आदि मोहकता से युक्त हैं ।

बी. एन. आर्या– बद्रीनाथ आर्य वॉश पद्धति के सुप्रसिद्ध चित्रकार हैं। उत्तर भारत में नव बंगाल शैली के प्रतिपादक रहे हैं। उन्होंने वॉश पद्धति में बड़े–बड़े चित्र बनाएं उनके चित्रों के विषय महाकाव्य, काव्य और पौराणिक रहे हैं। सांवरिया, भरत मिलाप, शीत रात्रि आदि उनके प्रशंसनीय चित्र हैं।

एन.के.मिश्र–नलिनी कुमार मिश्र लखनऊ से सम्बद्ध वाश पद्धति के चित्रकार हैं। उनके चित्रों के विषय धार्मिक हैं। उनके चित्रों में कल्पना युक्त अलंकरण है शिवा ,सरस्वती देवी, वराह, विष्णु, सती का देह त्याग उनके उल्लेखनीय चित्र है।

राजेंद्र प्रसाद– राजेंद्र प्रसाद जी भी लखनऊ से सम्बद्ध वॉश पद्धति के प्रतिभावान चित्रकार हैं। वॉश पद्धति को लेकर आधुनिकतावादी प्रगतिशील कलाकार हैं।

हरिहर लाल मेढ– हरिहर लाल मेढ वॉश पद्धति के चित्रकार के साथ–साथ व्यक्ति चित्रकार भी हैं। लखनऊ के वॉश चित्रकला में उनका विशेष स्थान है। मेघदूत उनकी सर्वाधिक सफल चित्र श्रृंखला है।

क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार– मजूमदार जी अवनींद्र नाथ टैगोर के प्रिय शिष्यों में से एक थे। वह वॉश पद्धति के अतिरिक्त किसी अन्य प्रयोग के पक्षधर नहीं रहे। उनके चित्रों का विषय अधिकांशता वैष्णव संप्रदाय से संबंधित है।उनके चित्रों में संगीतमयता तथा वृक्षों में ऐठन दृष्टिगोचर होती है। उन्हें 'भावो का सम्राट' कहा गया है। जया अप्पा स्वामी के अनुसार 'क्षितिंद्रनाथ के रंग एवं रेखाओं में मध्य कालीन कवियों की कविता का आभास होता है उनके कुछ प्रमुख चित्र हैं श्री चैतन्य का गृह त्याग, राधा का अभिसार, चैतन्य की चटशाला, पालित मृग, भारत लक्ष्मी, गुरु के द्वार पर आदि।

श्याम बिहारी अग्रवाल— श्याम बिहारी अग्रवाल जी की एक कला मर्मज्ञ है। चित्रकला का कोई रूप उनसे अछूता नहीं रहा है। वह वॉश पद्धति के विशेषज्ञ हैं तथा क्षितीन्द्र नाथ मजूमदार के प्रिय शिष्य भी रहे हैं। ब्लैकस्मिथ, अभिसारिका आदि आपके के प्रसिद्ध चित्र हैं। वह एक्रेलिक रंग में भी वॉश जैसा प्रभाव लाने के लिए जाने जाते हैं।

राजेंद्र गुप्त– राजेंद्र गुप्त वॉश पद्धति के कार्यरत चित्रकार हैं। उनके चित्रों में रंगों की स्वच्छता और आकर्षण विशेष उल्लेखनीय है।

हरीश जौहरी– हरीश जौहरी के चित्र सनातन धर्म से संबंधित हैं और आध्यात्मिकता से ओतप्रोत हैं। उनके चित्र शैली में अजंता, एलिफेंटा और एलोरा की कला प्रमाणों और शैलियों का सुंदर समन्वय दिखाई देता है।

निष्कर्ष

भारतीय चित्रकला में वॉश पद्धति स्वदेशी कहीं जा सकने वाली रचना प्रविधि की खोज का परिणाम थी एक ऐसी शैली जिसे भारतीय कहा जा सके। ऐसी प्रविधि जो अंग्रेजी या विदेशी की नकल के ढप्पे से मुक्त हो जिसे अपना कहा जा सके। वॉश पद्धति बंगाल शैली के चित्रों का आधार बनी। यह इतनी लोकप्रिय हुई कि बिना वॉश पद्धति के बंगाल शैली के चित्रों को बंगाल शैली का मानना दर्शकों के लिए मुश्किल था। यह पद्धति अवनींद्रनाथ टैगोर द्वारा जितनी मेहनत और लगन से प्रारंभ की गई उनके शिष्यों ने इसे उसी उत्साह और समर्पण से पूरे देश में प्रचार प्रसार किया। इसे उन्होंने एक विरासत की तरह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक गुरु शिष्य परम्परा के माध्यम से पहुंचाया। वॉश पद्धति की विशेषताओं के कारण वॉश चित्र अत्यंत लोकप्रिय हुए परंतु वॉश पद्धति के श्रमसाध्य होने के कारण कलाकारों द्वारा व्यापक रूप से अपनाई नहीं गई या अन्य शब्दों में कहें तो वाश पद्धति एक समान्य रचना पद्धति नहीं बन सकी। इसे विशेष लगनशील और प्रतिभावान चित्रकारों द्वारा ही अपनाया गया। वर्तमान समय मे कई चित्रकार वॉश पद्धति में चित्रण कार्य कर रहे हैं और इस पद्धति को लेकर प्रयोगधर्मी भी हैं जो कि इस विरासत को संजोए रखने की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य है।

संदर्भ

- शर्मा डॉ.एस. के. शर्मा, डॉ. अंबिका भारतीय चित्रकला का उद्देश्य पूर्ण अध्ययन मानसी प्रकाशन 39 कैलाशपुरी मेरठ–2004
- अग्रवाल जीके आधुनिक भारतीय चित्रकला संजय पब्लिकेशंस शैक्षिक पुस्तक प्रकाशक अस्पताल मार्ग आगरा– 2006
- वर्मा डॉ अविनाश बहादुर भारतीय चित्रकला का इतिहास प्रकाश डिपो बरेली– 1977
- अग्रवाल डॉ श्याम बिहारी मानव आकृति एवं चित्र संयोजन रूप सिर्फ प्रकाशन इलाहाबाद– 2001
- प्रताप डॉ रीता, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास राजस्थान हिंदी अकादमी जयपुर– 2008
- गोस्वामी डॉ.प्रेमचंद, आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तंभ राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर–2015
- मागो प्राणनाथ, भारत की समकालीन कला एक परिप्रेक्ष्य नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया ए 5 ग्रीन पार्क नई दिल्ली
- www.veethi.com
- www.sukhvirsanghal.com
- www.picasomio.com
- www.sanatansociety.com
- www.wikipedia.cpm